

## जल प्रदूषण से मनुष्य को होने वाली बीमारियां

1. आर्सेनिक (अधिक मात्रा) - आमशय, आंतों में घाव, फेफड़े का कैंसर, गुर्दों की खराबी, लीवर की बीमारी।
2. बेरियम - दस्त, तन्तु वाहिनी मांसपेशियों का लकवा, पेट का दर्द, आंतों में दर्द आदि।
3. कैडमियम - मानसिक तनाव, शारीरिक वृद्धि का रुकना, गुर्दों की क्षति, वृषण का छोटा होना, ट्यूमर का बनना।
4. क्रोमियम - केन्द्रीय तंत्रिका संबंधी बीमारियां, कैंसर, अमाशय व आंतों में घाव, नेफ्राइटिस।
5. कोबाल्ट - फेफड़ों में जलन, हड्डियों में कमजोरी तथा निम्न रक्त चाप।
6. कापर - बुखार, यूरिनिया, बेहोशी, अत्याधिक मानसिक थकान।
7. पारा - सीने का दर्द व सिरदर्द, अतिसार, पेट दर्द व ऐंठन।
8. सेलेनियम - उल्टी, दंतच्छिद्र, बुखार, घबराहट, रक्त चाप में गिरावट, जिगर, गुर्दा, तिल्ली में निरन्तर क्षति।
9. जिंक - गुर्दों में खराबी और शरीर में अकड़न।
10. मल से प्रक्षालित जल - अतिसार, हैजा, ई. कोलाई, डायरिया, पेचिश, एंटरिक ज्वर, टाइफाइड, पोलियो, हेपेटाइटिस, लेप्टोपिरोसिस, एस्कैरिस।
11. प्रदूषित प्रक्षालित जल - चर्म एवं चक्षु संक्रमण, संक्रामक चक्षु रोग, चीलर एवं जूं से संबंधित बार-बार आने वाला बुखार।
12. जल पर आधारित रोग - चर्म भेदक, सिस्टोरोमाइसिस, गीनिया वर्म, विभिन्न प्रकार के कृमि रोग।
13. जल के रोगवाहक कीट - जल के निकट काटने वाले कीट, स्लीपिंग सिकनेस।
14. जल में अंडे देने वाले कीटों - मलेरिया, फाईलेरिया, डेंगू, नारु, पीत ज्वर आदि।  
से होने वाली बीमारियां

हम सभी जानते हैं कि जल हमारे जीवन का अनिवार्य अंग ही नहीं है अपितु चहुंमुखी विकास की भी आधार-भूत भूमिका निभाता है। स्वयं इन्सान में लगभग सत्तर प्रतिशत पानी ही होता है। फिर भी आज हम जल को प्रदूषित कर रहे हैं जिससे उपरोक्त बीमारियां उजागर हो रही हैं। आइये हम संकटपूर्ण स्थिति आने से पूर्व ही संभल जायें एवं जीवनदायी जल को पुनः स्वच्छ बनाकर जीवन स्वस्थ और सुरक्षित बनायें।

---

श्याम कुमार, "तकनीशियन"